Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852; Impact Factor: RJIF 5.44
Received: 27-09-2020; Accepted: 12-10-2020; Published: 28-10-2020
Volume 1; Issue 2; 2020; Page No. 33-35

पंडित दीन दयाल उपाध्याय के विचार और दर्शन

वीना सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर पी० जी०कालेज, जंगल धूसण, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

दीन दयाल उपाध्याय राजनेता मात्र नही थे वह उच्चकोटि के चिन्तक, विचारक और लेखक भी थे। इस रूप में उन्होंने सर्वश्रेष्ठ शक्तिशाली और संतुलित रूप में विकसित राष्ट्र की कल्पना की थी उन्होंने अपने स्वयं के सुख, सुविधाओं को त्याग दिया था। व्यक्तिगत जीवन से स्वयं की कोई महत्वाकांक्षा नही था। उन्होंने अपना जीवन समाज और राष्ट्र को समर्पित कर दिया था, या ये कहे कि समूल न्यौछावार हो गए थे। यही तथ्य उन्हें महान बनाती है।

राजनीति में लगातार सक्रियता के बाद भी वह अध्ययन एवं लेखन के लिए सदैव समय निकालते थे। इसके लिए वह अपने विश्राम, आराम के समय कटौती करते थे। इसी दौरान लोगों से मिलना जुलना भी लगा रहता था और साथ ही अनवरत यात्रा भी चलती रहती थी, आम लोगों के बीच रहना उन्हें अच्छा लगता था। शायद यही कारण था कि वह देश के आम व्यक्ति की समस्याओं को भली–भॉति समझ चुके थे। यह विषय उनके चिंतन व अध्ययन में भी समाहित था। उनका व्यक्तित्व व कृतित्व बहुआयामी है। विभिन्न रूप में उनसे प्रेरणा प्राप्त किया जा सकता है। समाज सेविओं व राजनीति में जुड़े व्यक्ति उनसे प्रेरणा ले सकते हैं।

सादगी ईमानदारी और अध्ययन शीलता उनमें निखार ला सकती है। युवा पीढ़ी भी उनके हिम्मत, जज्वे से प्रेरणा ले सकती है। लेखन वही अच्छा है, जो समाज के हित में हों। जिससे आती पीढ़ी को सकारात्मक दिशा प्राप्त हो सकें। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर तात्कालिक घटनाओं व विचारों का प्रभाव पड़ता है। चिंतक मनीषी उन्हें गहराई से समझने का प्रयास करते है। वह इस पर विचार करते है कि अपने देश व समाज के लिए कौन सा मार्ग सही और कल्याणकारी होगा।

पंडित दीन दयाल जी ने यही किया वह भविष्य द्रव्य थे। वह भविष्य की समस्याओं को भी देख रहे थे। उनके प्रति वे सावधान करते है। उन्होंने उस समय चर्चित विचार धाराओं या वाद पर गहनता से विचार किया था। संयोग से वह विष्व में शतियुद्ध का दौर था तो दूसरी तरफ मार्क्सवाद, लेनिनबाद, माओवाद था। समाज वाद का विचार भी अस्तित्व मे थे सोशलिस्ट पार्टियां भी सक्रिय थी। दीन दयाल जी ने इन सब पर विचार किया।

पाश्चात चिन्तन उपभोग वाद पर आधारित था इसके केन्द्र में व्यक्ति था। व्यक्ति को अपनी सुख सुविधाओं के लिए सक्रिय रहने एवं प्रयास करते रहने का अधिकार है। इस विचार से प्राकृतिक संसाधनों का बेहिसाब व बेरहमी से दोहन किया, भौतिक विकास हुआ। लेकिन प्रकृति खतरनाक स्तर पर जा रही है। तरह–तरह के वैश्विक सम्मेलन हो रहे है। खूब चर्चा होती है, विशेषज्ञ समस्याओं की चर्चा करते है। लेकिन हर बार कोई समाधान नजर नही आता।

उपभोगवाद की दौड़ ने उन्हें जहाँ पहुंचा दिया है, वहाँ से लौटना सम्भव नही है। उपभोग वाद ने उनके समाज को भी अराजकता की स्थिति में पहुंचा दिया है। समाज विखर रहा है, परिवार टूट रहे है। वृद्धावस्था आश्रम बन रहे है। अब वहाँ विशेषज्ञ रिसर्च पेपरों में विश्लेषण कर रहे है। उनका समाजवाद उपभोगवाद में उलझ कर रह गया है। इससे बाहर निकलने का कोई रास्ता फिलहाल नजर नही आ रहा है। दीनदयाल उपाध्याय जी ने इस दृश्य की कल्पना छह दशक पहले कर ली थी। वह इसके प्रति सावधान करते थे, ऐसा नही है कि उनका विचार संकचित था विदेश नीति व विदेशों से संबंधों पर भी उन्होंने अपने विचार रखे थे। विदेशों के साथ सहयोग बढ़ाना चाहिए। लेकिन हमको यह देखना होगा कि दूसरे देशों की कौन सी बात हमारे हित में होगी। उनके वाद को यथावत स्वीकार नही किया जा सकता। हमको अपने देश की परिस्थितियों पर विचार करना चाहिए। विदेशी पूंजी अपने साथ वहां की संस्कृत भी लाती है। इनके प्रति सावधान भी रहना चाहिए।

दीनदयाल उपाध्याय जी द्वारा व्यक्त विचार व चिन्ता आज दिखने लगी है। हमारे यहाँ भी ओल्डएज होम बनने लगे है। सरकार को माता पिता के देखभाल हेतु कानुन बनाना पड़ता है। युवा पीढ़ी व बच्चां का खानपान बदल रहा है। फास्ट फूड के नुकसान बताए जाते है, लेकिन उनका चलन बढ़ रहा है, चना चबेला, सत्तू दूर्लभ हो रहे है। दीनदयाल उपाध्याय जी के विचार इस संदर्भ में प्रासंगिक है। वह इस समस्या से बाहर निकलने का रास्ता दिखा सकते है।

इसी प्रकार मार्क्सवादी व वामपंथी विचारधार न समाज व देश का अहित किया है, इन्होंने इसके प्रति भी सावधान किया था। इसमें उपभोग वाद का सशर्त बनाया गया था व्यक्ति के जगह सत्ता को केन्द्र में रखा गया। यह मान लिया गया कि व्यक्ति भी व्यवस्था का मशीन मात्र है। सत्ता ही समाज को सही दिशा में संचालित करती रहेगी। इस वाद के नुकसान हुए।

बचाव करने वाले चाहे दावा करे लेकिन जिन देशों के लोगों ने दशकों तक जिस मार्क्सवादी व्यवस्था को भोग कर उसको अस्वीकार कर दिया, चीन में वही कम्यूनिस्ट व्यवस्था केवल राजनीति व सत्ता पर नियंत्रण और एकाधिकार के लिए बची है। आर्थिक क्षेत्र में वहाँ उपभोग वाद चरम पर है। कम्यूनिस्टों ने भारत को भी विदेशी चश्मे से देखा। इसलिए उन्हें अपने देश में कोई अच्छाई नजर नही आती। इन्होंने आत्महीन गौरव समाज बनाने का प्रयास किया जो कुछ अच्छा है, वह विदेशों से मिला है, हमारा कुछ नही यह विचार उन्होंने प्रसारित किया।

केवल सरकार के भरोसे सुधार का विचार भी विफल रहा। विश्व में सोशलिस्ट विचार भी अब केवल सिद्धान्तों में बचा है। व्यवहारिक जीवन में कही नजर नही आता।

दीनदयाल उपाध्याय जी का चिन्तन शास्वत विचारधारा से जुड़ता है इसके आधार पर वह राष्ट्रभाव को समझने का प्रयास करते है, समस्याओं पर विचार करते है। उनका समाधान निकालते है। यह तथ्य ही भारत के अनुकूल प्रमाणित होता है। ऐसे में पहली बात यही समझनी होगी की अन्य विचारों की भाँति उपाध्याय जी ने कोई वाद नही किया।

एकात्म मानव अन्त्योदय जैसे विचारवाद की श्रेणी में नही आते। यह दर्शन है। जो हमारी ऋषि परम्परा से जुड़ता है इसके केन्द्र में सत्ता नही है। व्यक्ति में मन बुद्धि, आत्मा सभी का महत्व है। प्रत्येक जीव में आत्मा का निवास है आत्मा को परमात्मा का अंश माना जाता है। यह एकात्म दर्शन है इसमें समरसता की विचार है। इसमें भेदभाव नही है। व्यक्ति का अपना हित स्वाभाविक है। लेकिन यही सब कुछ नही है। उपभोग वाद से लोक कल्याण सम्भव नही है। इसमें व्यक्ति का कल्याण नही है। यदि ऐसा होता तो भौतिकवाद की दौड़ में भी कभी तो व्यक्ति को संतोष मिलता। लेकिन ऐसा नही होता। मन कभी संतुष्ट नही होता। व्यक्ति प्रारम्भिक इकाई मात्र है। लेकिन यह परिवार का हिस्सा मात्र है। परिवार का हित हो, तो व्यक्ति अपना हित छोड़ देता है। समाज का हित हो तो परिवार का हित छोड़ देना चाहिए। देश का हित हो, तो समाज का हित छोड़ देना चाहिए। राष्ट्रवाद का विचार यह प्रत्येक नागरिक में होना चाहिए।

मानव जीवन का लक्ष्य भौतिक मात्र नही है। जीवन यापन के साधन अवश्य होने चाहिये। ये साधन है। साध्य नही। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का विचार भी ध्यान रखना चाहिए। सभी कार्य धर्म से प्रेरित होने चाहिये। एकात्म मानव दर्शन की प्रासंगिकता सदैव रहेगी। क्योंकि यह शास्वत विचारों पर आधारित है। उपाध्याय जी ने सम्पूर्ण जीवन की रचनात्मक दृष्टि पर विचार किया है। उन्होंने विदेशी विचारों को सार्वलौकिक नही माना।

भारतीय संस्कृति सम्पूर्ण जीवन व सम्पूर्ण सृष्टि का संकलित विचार करती है। इसका दृष्टिकोण एकात्मवादी है। टुकड़ों, टुकड़ों में विचार नही हो सकता। संसार में एकता का दर्शन उसके विविध रूपों के बीच परस्पर पूरकता को पहचानता है, उनमें परस्पर अनुकूलता का विकास करना तथा उसका संस्कार करना ही संस्कृति है। प्रकृति को ध्येय की सिद्धि हेतु अनुकूल बनाना संस्कृति और उसके प्रतिकुल बनाना विकृति है। संस्कृति प्रकृति की अवहेलना नही करती।

भारतीय संस्कृति में एकात्म मानव दर्शन है। मानव केवल एक व्यक्ति मात्र नही। शरीर मन बुद्धि और आत्मा का समुच्चय व्यक्ति केवल एकवचन में तक सीमित नही है। समाज व समष्टि तक उसकी भूमिका होती है। राष्ट्र भी आत्मा होती है। राष्ट्र एकमात्र प्रतिनिध नही होता। राज्य समाप्त होने के बाद भी राष्ट्र का अस्तित्व रहता है। उपाध्याय जी राष्ट्र की आत्मा से लेकर जैविक खाद व व्यापार तक पर चिन्तन करते है। उनके अध्ययन व मनन का दायरा कितना व्यापक था। इसकी परिकल्पना की जा सकती है। वह लिखते है कि अर्थ व्यवस्था सदैव राष्ट्रीय जीवन के अनुकूल होनी चाहिए। भरण पोषण जीवन के विकास राष्ट्र की धारणा व हित के लिए जिन मौलिक साधनों की आवश्यकता होती है उनका उत्पादन अर्थ व्यवस्था का लक्ष्य होना चाहिए।

पाश्चात्य चिन्तन और इच्छाओं को बराबर बढ़ाने और आवश्यकताओं की निरन्तर पूर्ति को अच्छा समझता है। इसमें मर्यादा का कोई महत्व नही होता। उत्पादन सामग्री के लिए बाजार ढुढना या पैदा करना अर्थनीति का प्रमुख अंग है। लेकिन प्रकृति की मर्यादा को नही भूलनी चाहिए। प्रकृति के साथ तुच्छ व्यवहार नही होना चाहिए। खाद्य सुरक्षा की बात अब सामने आई। दीनदयाल जी ने इस पर विचार विमर्श किया था। उनके अनुसार हमारा नारा यह होना चाहिए कि कमाने वाला खिलायेगा तथा जो जन्मा सो खायेगा। अर्थात खाने का अधिकार जन्म से प्राप्त है। बच्चे बुढ़े, रोगी, अपाहिज सबकी चिन्ता समाज को करनी पड़ती है।

इस कर्तव्य के निर्वाह की क्षमता पैदा करना ही अर्थ व्यवस्था का काम है। अर्थ व्यवस्था इस कर्तव्य की प्रेरणा का विचार नही कर पाता।

आज शिक्षा की व्यवस्था भी चिन्ता उत्पन्न करती है एक तरफ महंगी शिक्षा है। जिससे इसका लाभ कम लोग उठा पाते है। दूसरी ओर जहाँ शिक्षा सस्ती है उनकी दशा दिशा खराब है, वहाँ कोई मूलभूत सुविधाएँ भी नही, और वहाँ लोग जाना भी नही चाहते है। शिक्षा व्यवसाय की रूप ले चुकी है। जिनका शिक्षा से कोई मतलब नही और वही शिक्षण संस्थान के मालिक बन गए है। इस बात का अंदेशा उपाध्याय जी को था इसीलिए उन्होंने लिखा था कि शिक्षा समाज का दायित्व है। बच्चों को शिक्षा देना समाज के अपने हित है। आज शिक्षा की भांति चिकित्सा की दशा है। यहाँ भी व्यवसायीकरण है। उपाध्याय जी निःशुल्क चिकित्सा का सुझाव देते है। वह मानते है की पूंजीवादी अर्थ व्यवस्था मानव विकास को सिद्ध करने में असमर्थ है। इसके विरोध में समाजवादी अर्थव्यवस्था आयी यह भी विफल हुई।

दीनदयाल जी का अंत्योदय विचार आज भी प्रासंगिक है। भारत में अनेकावाद अपनाये गए। अब तो वैश्वीकरण और उदारीकरण को भी लम्बा समय हो गया। लेकिन अमीर व गरीब की खाई बढ़ी है। यह व्यक्तिवादी व उपभोगवादी चिंतन का भी परिणाम है। विकास हुआ मगर असंतुलित है। सत्ता व समाज दोनों की जिम्मेदारी से काम करने की उपाध्याय जी प्रेरणा देते है।

समाज के सबसे निचले पायदान पर जो व्यक्ति है उसके उत्थान का प्रयास प्राथमिकता से होनी चाहिए। भवन निर्माण से पहले छत नही बनायी जाती । निर्माण नींव से होता है शुरू। इसी प्रकार जब भवन की सफाई करनी होती है, तो यह कार्य ऊपर से प्रारम्भ होता है, फर्स का नम्बर सबसे बाद में आता है। यह समाज और सत्ता दोनों पर लागू होने वाला विचार है। इसी प्रकार दीनदयाल उपाध्याय में हर खेत को पानी हर हाथ को काम का विचार दिया था। विडंम्बना देखिए आज छह दशक के बाद भी यह समस्या बनी हुई है। यहाँ खेत में पानी का व्यापक अर्थ है। भारत कृषि प्रधान देश है। उन्नत खेती के लिए गम्भीरता से प्रयास करने की जरूरत है। खेती लाभप्रद होती है भंडारण बाजार की उचित व्यवस्था होती है, तो गाँव से शहर की ओर तो इतना पलायन नही होता। तब बड़ी संख्या में हमारे युवा कृशि कार्य में लगे होते।

किसान तेजी से मजदूर बनते गए। उन्हें रोकने का कारगार प्रयास नही हुआ। शहर व गाँव दोनों के बीच सन्तुलन स्थापित हो गया। विकास चाहे जितना भी हो जाए मगर हर हाथ को काम नही मिलेगा, तो भविष्य में सामाजिक स्तर पर भी गम्भीर समस्याओं का सामना करना होगा। कृषि व उद्योग व्यापार का भी टकराव नही होना चाहिए। संतुलित विकास में दोनों का योगदान है। दीनदयाल उपाध्याय के विचार आज भी समयानुसार प्रासंगिक है। इन्हीं माध्यमों से देश के वर्तमान समस्याओं की समाधान भी हो सकता है। इस प्रकार उन्होंने भारत की सनातन विचार धारा को युगानुकूल रूप में प्रस्तुत करते हुए देश को एकात्म मानववाद नामक विचारधारा दी। वे एक समावेशित विचारधारा के समर्थ के थे जो एक मजबूत और शसक्त भारत चाहते थे। राजनीति के अतिरिक्त साहित्य में भी उनकी गहरी अभिरूचि थी उपाध्याय जी भारतीय जन संघ के नेता और भारतीय राजनीतिक एवं आर्थिक चिन्तन को वैचारिक दिशा देने वाले पुरोधा थे। यह अलग बात है कि उनके बताए सिद्धांतों और नीतियों की चर्चा साम्यवाद और समाजवाद की तुलना में बेहद कम हुई है। भारत में ज्ञान के प्रचार प्रसार एवं संचार के प्रणाली के रूप में कथा और उपदेश पद्धति को पुरातन काल से स्वाकार्यता प्राप्त है।

आज के दौर में जब संचार के विविध माध्यम उपलब्ध है, तो बावजूद इसके भारत के आमजन के मानस पटल वर ''उपदेश अथवा कथा पद्धति के प्रति जो विश्वास है वो अन्य किसी भी पद्धति के प्रति नही। अगर इस परिप्रेक्ष्य से देखें तो दीनदयाल शोध संस्थान द्वारा की जा रही यह शुरूआत पूर्णतया भारतीय भावना के अनुरूप है। एकात्म मानववाद के इस वैचारिक दर्शन का प्रतिपादन उपाध्याय जी ने मुम्बई में 22 से 25 अप्रैल 1965 में चार अध्यायों में दिए गए भाषण में किया। वे मानव को विभ्ज्ञाजित करके देखनने के पक्षधर नही थे। वे मानव मात्र कहर उस दृष्टि से मूल्यांकन करने की बात करते है, जो उसके सम्पूर्ण जीवन काल में छोटी या बड़ी जरूरत के रूप में सम्बन्ध रखता

है। दुनिया के इतिहास में सिर्फ मानव मात्र के लिए अगर किसी एक विचार दर्शन ने समग्रता में चिन्तन प्रस्तुत किया है, तो वो एकात्मक मानववाद का दर्शन है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने कुछ अपने अनमोल विचार भी हमारे बीच रखे है जो अग्रणी है। जैसे– मानवीय और राष्ट्रीय दोनों तरह से यह आवश्यक हो गया है कि हम भारतीय संस्कृति के सिद्धांतों के बारे में सोचे। धर्म के लिए निकटतम समान अंग्रेजी शब्द जन्मजात कानून हो सकता हालांकि यह भी धर्म के पूरा अर्थ को व्यक्त नही करता है, चूकि धर्म सर्वोच्च है हमारे राज्य के लिए आदेश 'धर्म का राज्य' होना चाहिए।

''संघर्ष सांस्कृतिक स्वभाव का एक संकेत नही बल्कि यह उनके एक गिरावट का एक लक्षण है।''

धर्म अर्थ काम और मोक्ष की लालसा व्यक्ति में जन्मजात होता है और इनमें संतुष्टि एकीकृत रूप से भारतीय संस्कृति का सार है।''

मानव प्रकृति में दोनों प्रकृतिया रही है। एक ओर क्रोध और लालच तो दूसरी ओर प्रेम और बलिदान।''

बीज की इकाई विभिन्न रूपों में प्रकट होती है, जड़े तना शाखाएँ, पत्तियाँ, फूल और फल इन सबके रंग और गुण अलग–अलग होते है फिर भी बीज के द्वारा हम इन सबके एकत्व के रिश्ते को पहचान लेते है।''

उपाध्याय जी के कथनानुसार एकात्म मानववाद मानव जीवन सम्पूर्ण सृष्टि के एकमात्र सम्बन्ध का दर्शन है। इसका वैज्ञानिक विवेचन इन्होंने किया था एकात्म मानववाद राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ का मार्ग दर्शक है। दशर्न है।

संदर्भ सूची

1. एकात्म मानवतावाद : तत्व मीमांसा – सिद्धांत –विवेचन – पं० दीनदयाल उपाध्याय
2. मैं दीनदयाल बोल रहा हूँ – अमरजीत सिंह
3. The Two Plans – पं० दीनदयाल उपाध्याय
4. जगद्गुरु श्री शंकराचार्य – पं० दीनदयाल उपाध्याय